Journal of Science and Research Innovations

Volume - 4, Issue - 1, June 2026 ISSN: 2583-9004 (ONLINE)

Received: 23-05-2026 **Revised**: 27-05-2026 **Accepted**: 03-06-2026

"समाज में स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ का प्रभाव (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)"

* **डॉ.आशीष बृज**
विभागाध्यक्ष
विधि विभाग
अ.प्र.सिंह वि.वि.
रीवा

** **सरला साकेत**
शोधार्थी
एल–एल.एम.

सारांश :

स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थों का दुरुपयोग समाज के लिए एक गंभीर अभिशाप है। यह युवाओं के स्वास्थ्य को नष्ट कर रहा है, अपराध दर बढ़ा रहा है और परिवारों को आर्थिक व भावनात्मक रूप से तबाह कर रहा है। इन पदार्थों का समाज पर बहुआयामी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नशाखोरी भारत की प्रमुख समस्याओं में से एक है, जो हर साल लाखों लोगों को काल का ग्रास बना लेती हैं। इसकी वजह से युवा शारीरिक, मानसिक व आर्थिक रूप से असहाय हो जाता है अर्थात यह एक ऐसा दलदल है जिसमें एक बार फसने के बाद निकलना मुश्किल पड़ जाता। वह जीते जी खत्म हो जाता है। इनकी लत शौक से प्रारम्भ होकर मजबूरी में समाप्त होती है।

शब्द कुंजी : नशीली दवाओं की लत, युवा, भारत, शारीरिक निर्भरता, स्वस्थ जीवन, समाज, दलदल

परिचय

भारतीय समाज दुनिया के सबसे प्राचीन और जटिल समाजों में से एक है, जो अपनी विविधता में एकताष के लिए जाना जाता है। यह विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों और संस्कृतियों का एक अनूठा मिश्रण है, जहाँ आधुनिकता के साथ–साथ प्राचीन परंपराओं और संयुक्त परिवार प्रणाली का आज भी गहरा प्रभाव है। इसी समा का एक अभिन्न अंग युवा पीढ़ी है जो किसी भी देश के विकास की आधारशिला होती है। लेकिन आज नशाखोरी हमारे समाज के लिए एक बड़ी चिंता का विषय बन गई है। खेल–कूद की उम्र में ही स्कूली और कॉलेज के बच्चे और युवा नशे की लत में फंसते जा रहे हैं। इस बुराई के लिए कुछ हद तक जिम्मेदार ठहराया जा सकता है कि बदलती सामाजिक मान्यताएं, कुछ नया करने की चाहत, तनावपूर्ण दिनचर्या, पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव आदि समाज में नशे की लत के इस चलन को बढ़ावा देते हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि युवाओं में नशे की लत का प्रतिशत दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। युवाओं में नशे की शुरुआत आमतौर पर स्कूल में मीठी सुपारी और पान मसाला से होती है, जो धीरे–धीरे तंबाकू, सुपारी और सिगरेट जैसे नशीले पदार्थों तक पहुंच जाती है। जब एक बार वे साथियों के दबाव, सामाजिक दबाव या अन्य कारणों से नशे की चपेट में आ जाते हैं, तो उन्हें इस दलदल से

निकालना बहुत मुश्किल हो जाता है। लेकिन अगर माता–पिता बच्चों पर नजर रखें और उनकी गतिविधियों और व्यवहार पर निगरानी रखें, तो शुरुआती चरण में ही उन पर नियंत्रण रखकर इस समस्या को रोका जा सकता है। नशे के आदी लोगों का व्यवहार अप्रत्याशित, आवेगपूर्ण और गुप्त होता है, और जैसे–जैसे उनकी लत बढ़ती है, उनका स्वास्थ्य और शारीरिक रूप–रंग तेजी से बिगड़ने लगता है। उनकी सोचने–समझने की क्षमता कम हो जाती है और वे असहनीय हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे अपनी नौकरी खो देते हैं, पढ़ाई छोड़ देते हैं, दीर्घकालिक रिश्ते टूट जाते हैं, आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हैं या मादक पदार्थों के सेवन और अन्य आपराधिक व्यवहार से संबंधित अपराधों के लिए गिरफ्तार हो जाते हैं। आधुनिक समाज में कई प्रकार के नशीले पदार्थ प्रचलित हो गए हैं, जो बहुत हानिकारक हैं और हमारे शरीर पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ ऐसे रसायन या प्राकृतिक उत्पाद हैं जो मानव मस्तिष्क के केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव डालते हैं। इनके सेवन से मानसिक स्थिति, व्यवहार, धारणा और जागरूकता में बदलाव आता है। इन पदार्थों के दुरुपयोग, अवैध व्यापार और उत्पादन को रोकने के लिए भारत में NDPS अधिनियम, 1985 (Narcotic Drugs and Psychotropic Substances Act) लागू किया गया है।

1. स्वापक औषधि मुख्य रूप से अफीम, कोका या भांग के पौधों से प्राप्त प्राकृतिक उत्पाद हैं, जो भारी नींद, दर्द से राहत और लत का कारण बनते हैं। जैसे : अफीम , गांजा), हेरोइन/मॉर्फिन , और कोकीन
2. मनः प्रभावी पदार्थ (साइकोट्रोपिक सब्सटेंस): मुख्य रूप से प्रयोगशालाओं में बनाए जाने वाले कृत्रिम (सिंथेटिक) या रासायनिक पदार्थ होते हैं।
3. जैसे : एम्फैटेमिन , अल्प्राजोलम , मेथाक्वालोन (डमजीुंनंसवदम), और डायजेपाम

भारत में NDPS अधिनियम के प्रमुख प्रावधान सख्त प्रतिबंध: चिकित्सा, वैज्ञानिक या औद्योगिक उपयोग को छोड़कर किसी भी व्यक्ति द्वारा ऐसे पदार्थों के उत्पादन, निर्माण, खेती, कब्जे, बिक्री, खरीद, परिवहन या सेवन को पूर्णतः अवैध माना गया है।

भारत में प्रतिवर्ष उपभोग किये जाने वाले विभिन्न स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ_आंकड़े :

- भारत में मादक पदार्थों की लत बढ़ रही है, नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के अनुसार भारत में लगभग 100 मिलियन लोग विभिन्न नशीले पदार्थों से प्रभावित हैं।
- उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और पंजाब जैसे राज्यों में वर्ष 2019 और 2021 के बीच नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट (एनडीपीएस) के तहत सबसे अधिक दर्ज की गईं।
- ऐल्कहॉलिजम एक दीर्घकालिक बीमारी है जिसके कारण लोगों को शराब पीने की तीव्र इच्छा होती है और वे शराब पीने पर नियंत्रण नहीं रख पाते।
- भांग लगभग 3.1 करोड़ लोग (2.8:) भांग का सेवन करते हैं, जिनमें से 72 लाख (0.66:) भांग से संबंधित समस्याओं का सामना कर रहे हैं।
- 'ओपिओइड का उपयोगरू 2.06: जनसंख्या ओपिओइड का उपयोग करती है, और लगभग 0.55: (60 लाख) को ओपिओइड निर्भरता के लिये उपचार सेवाओं की आवश्यकता है।
- सीडेटिव 1.18 करोड़ (1.08:) व्यक्ति गैर–चिकित्सीय प्रयोजनों के लिये सीडेटिव का उपयोग करते हैं।
- इनहेलेंट इनहेलेंट का दुरुपयोग 1.7: बच्चों और किशोरों को प्रभावित करता

है, जो वयस्कों में 0.58ः की व्यापकता से काफी अधिक है। लगभग 18 लाख बच्चों को इनहेलेंट के दुरुपयोग की रोकथाम हेतु सहायता की आवश्यकता है।

- इंजेक्शन द्वारा मादक द्रव्यों का प्रयोग लगभग 8.5 लाख लोग मादक द्रव्यों का इंजेक्शन द्वारा प्रयोग करते हैं, जिन्हें पीपुल हू इंजेक्ट ड्रग्स कहा जाता है।
- शराब सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के भारत में मादक द्रव्यों के सेवन की सीमा और पैटर्न पर 2019 के राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार, 10 से 75 वर्ष की आयु के 16 करोड़ लोग (14.6ः) वर्तमान में शराब का सेवन करते हैं।

मादक द्रव्य और पदार्थ के विभिन्न प्रकार :

उत्तेजक पदार्थ केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को उत्तेजित करते हैं, जिससे सतर्कता और शारीरिक सक्रियता में वृद्धि होती है। इनके कारण मूड स्विंग, अनिद्रा, अनियमित हृदय स्पंद और चिंता जैसी समस्याएँ हो सकती हैं।

उदाहरण : कोकीन, क्रैक, एम्फेटामाइन्स, तथा एमाइल या ब्यूटाइल नाइट्राइट्स जैसे इनहेलेंट्स।

अवसादक –मद्य, बार्बिटुरेट्स और ट्रैंक्विलाइजर जैसे अवसादक पदार्थ केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को मंद कर देते हैं, जिससे शरीर शिथिल हो जाता है। मद्य के दुरुपयोग से बोलने में कठिनाई, स्मृति–लोप तथा गंभीर मामलों में अचेतनता या मृत्यु हो सकती है।

उदाहरणः बार्बिटुरेट्स और ट्रैंक्विलाइजर

हैलुसिनोजन–हैलुसिनोजन के उपयोग से मनुष्य की अनुभूति में परिवर्तन आता है, जिससे भावनात्मक उतार–चढ़ाव, व्यामोह, भ्रम और उलझन जैसी समस्याएँ होती हैं। हालाँकि ये शारीरिक रूप से व्यसनकारी नहीं हैं, लेकिन वे स्थायी मनोवैज्ञानिक नुकसान पहुँचा सकती हैं।

उदाहरण :एक्स्टसी, साइलोसाइबिन (मैजिक मशरूम)।

वियोजनी औषधियाँ –वियोजनी औषधियाँ के उपयोग से शरीर और परिवेश से अलगाव की अनुभूति होती है जिससे गतिक कार्य बाधित होते हैं और भ्रम उत्पन्न होता है।

उदाहरणः केटामाइन, डीएक्सएम (डेक्सट्रोमेथॉरफन).

ओपियोइड

ये अत्यधिक व्यसनकारी हैं और दर्द से राहत एवं सुखाभास में मदद करती हैं।

उदाहरण : हेरोइन, अफीम, औषधीय दर्द निवारक (जैसे, कोडीन, मॉर्फिन)।

इनहेलेंट –इनहेलेंट से सिरदर्द, मतली, समन्वय लोप और गंभीर मामलों में श्वासरोध या मौत हो सकती है। उदाहरण :गैसोलीन, पेंट थिनर, एमाइल नाइट्राइट।

कैनबिस– abis sativa पौधे से प्राप्त कैनाबिस का उपयोग प्रायः मारिजुआना, हशीश और हैश ऑयल जैसे रूपों में किया जाता है। इसका दुरुपयोग स्मृति, एकाग्रता को कम करता है और व्यामोह, व्यसन एवं दीर्घकालिक संज्ञानात्मक समस्याएँ हो सकती हैं। उदाहरणः मारिजुआना, हषीष, हैष अष्यल।

भारत में मादक द्रव्यों के बढ़ने का कारण

1. साथियों का प्रभावः दोस्तों के साथ घुलने–मिलने, विशेष रूप से हाई स्कूल और कॉलेज में, और सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने की इच्छा से प्रायः मादक द्रव्यों का सेवन शुरू किया जाता है।
2. शैक्षणिक तनाव और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ– शैक्षणिक रूप से उत्कृष्टता प्राप्त करने का दबाव, उच्च प्रतिस्पर्ध के साथ मिलकर तनाव, चिंता और अवसाद का कारण बन सकता है। कुछ युवा इन दबावों से निपटने के लिये मादक द्रव्यों का उपयोग करते हैं।
3. सांस्कृतिक मानदंड और मीडिया का प्रभाव– मीडिया, फिल्मों और संगीत में मादक द्रव्यों के उपयोग को बढ़ावा देने से प्रायः युवा वर्ग के बीच मादक द्रव्यों के सेवन को सामान्य बना दिया जाता है, जिससे यह प्रचलन में आ जाता है या स्वीकार्य हो जाता है।
4. मादक पदार्थों के दुरुपयोग से निपटने में राज्य प्राधिकारियों और स्थानीय सरकारों की सीमित भूमिका से भारत में मादक पदार्थों का उपयोग बढ़ा है।
5. सामाजिक–आर्थिक कारक– गरीबी, बेरोजगारी, शैक्षिक और मनोरंजक संसाधनों तक सीमित पहुँच के कारण मादक द्रव्यों के सेवन की संभावना बढ़ जाती है, क्योंकि युवा लोग बचने या

इससे निपटने के लिये मादक पदार्थों का सहारा लेते हैं।

6. पारिवारिक वातावरण– अव्यवस्थित पारिवारिक गतिशीलता, माता–पिता द्वारा मादक द्रव्यों के सेवन का दुरुपयोग, तथा भावनात्मक समर्थन का अभाव प्रायः युवाओं में मादक पदार्थों के उपयोग की उच्च दर से संबंधित हैं। एक सहायक पारिवारिक वातावरण इन जोखिमों को कम कर सकता है।
7. विधिक व्यवस्था की खामियाँ– संगठित अपराध गिरोह विधिक व्यवस्था की खामियों का फायदा उठाते हैं, जैसे कि कमजोर सीमा नियंत्रण, ताकि वे मादक पदार्थ की तस्करी कर सकें। ये प्रायः अफ्रीका और दक्षिण एशिया से व्यापार मार्गों का दुरुपयोग करके मादक पदार्थ की तस्करी करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है–

1. समाज में पारिवारिक विघटन की स्थिति का अध्ययन करना।
2. समाज में अपराध व हिंसा में वृद्धि अध्ययन करना।
3. समाज में मादक पदार्थो से सेवन से गिरते हुए स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
4. समाज में उत्पादकता में कमी व आर्थिक नुकसान का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

1. समाज में पारिवारिक विघटन की स्थिति का अध्ययन करना।
2. समाज में अपराध व हिंसा में वृद्धि अध्ययन करना।
3. समाज में मादक पदार्थो से सेवन से गिरते हुए स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
4. समाज में उत्पादकता में कमी व आर्थिक नुकसान का अध्ययन करना।

शोध समस्या का सीमांकन

शोधार्थी ने अपना शोध क्षेत्र रीवा जिले के वार्ड क्र.09, 10, 11 एवं 12 वार्ड के कुल 100 व्यक्तियों का प्रत्येक जाति वर्ग से किया गया है। प्रत्येक वार्ड से 25–25 व्यक्तियों का चुनाव किया गया है। जिसमें 50 सामान्य वर्ग, 20, ओ.बी.सी.,15 एस.सी. एवं 15 एस.टी. के लोगों का चयन किया गया।

शोध क्षेत्र का परिचय :

रीवा जिला 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग कि.मी. है। इसके उत्तर में उत्त प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तरप्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व उत्तर का मिर्जापुर जिला दक्षिण में सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम में सतना स्थित है। रीवा में कई वार्ड है जिनमें से क्रमशः वार्ड क्र. 09, 10,11 एवं 12 को चयनित किया गया है।

अध्ययन पद्धति :

प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु विभिन्न स्तर की शोध विधियों तथा तकनीकों का प्रयोग किया गया है शोध अध्ययन को पूर्ण करने के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनो प्रकार के आंकड़ों एवं सूचनाओं को आधार बनाया गया है। प्राथमिक आंकड़े साक्षात्कार अनुसूचि द्वारा इकट्ठे किए गये हैं और द्वितीयक आंकड़ो के लिए अखबार, समाचार एवं पत्रिकाओं के माध्यम से लिया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कर्ा सही अर्थो में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

तालिका नं. 01

समाज में पारिवारिक विघटन की स्थिति

स. क्र.	नशे के कारण मनोदशा पर प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	80	20
2	नही	20	20
	कुल संख्या	100	100

ग्राफ–01

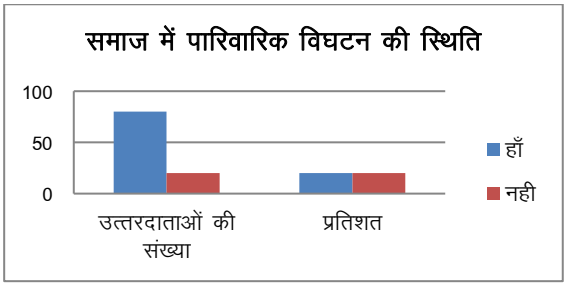

उपरोक्त तालिका क्र.01 का अध्ययन करने से पता चलता है कि स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ_के सेवन से मनोदशा प्रभावित होती है जिसके पक्ष में 80 प्रति. व विपक्ष में 20 प्रति. है। अतः पहली परिकल्पना स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ के सेवन से समाज में पारिवारिक विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है।

तालिका नं. 02

समाज में अपराध व हिंसा में वृद्धि

स.क्र.	नशे के कारण शिक्षा में प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	85	85
2	नही	15	15
	कुल संख्या	100	100

उपरोक्त तालिका क्र.02 का अध्ययन करने से पता चलता है कि स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ_के सेवन से मनोदशा में विकृति आती है जिसके पक्ष में 85 प्रति. व विपक्ष में 15 प्रति. है। अतः दूसरी परिकल्पना स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ के सेवन से समाज में अपराध व हिंसा में वृद्धि होती है।

ग्राफ–02

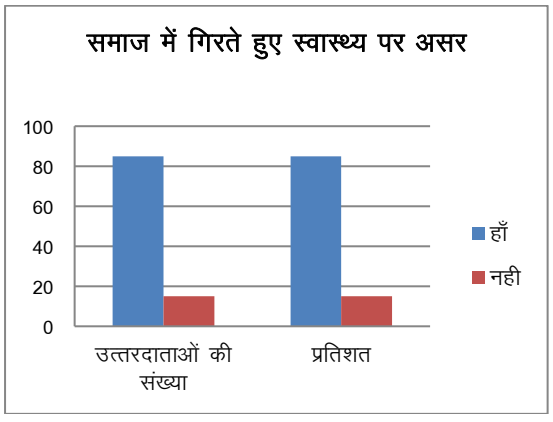

तालिका नं. 03

समाज में गिरते हुए स्वास्थ्य पर असर

स. क्र.	नशे के कारण आर्थिक स्तर में प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	90	90
2	नही	10	10
	कुल संख्या	100	100

ग्राफ–03

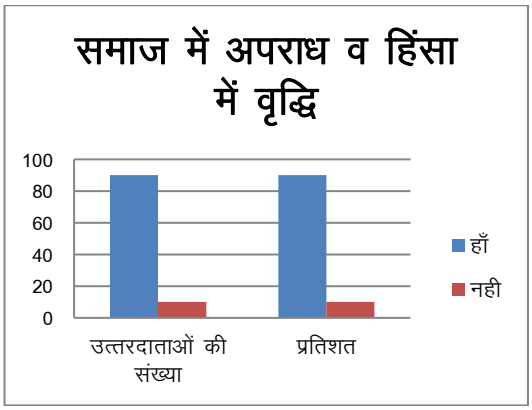

उपरोक्त तालिका क्र.03 का अध्ययन करने से पता चलता है कि स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ_के सेवन से व्यक्तियों के लीवर , हार्ट, किडनी व गुर्दे प्रभावित होते हैं जिससे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः तीसरी परिकल्पना स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ के सेवन से समाज में अधिकांश व्यक्ति शारीरिक रूप से पीड़ित रहते हैं।

तालिका नं. 04

समाज में उत्पादकता में कमी व आर्थिक नुकसान

स.क्र.	नशे के कारण आर्थिक स्तर में प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	90	90
2	नही	10	10
	कुल संख्या	100	100

ग्राफ–04

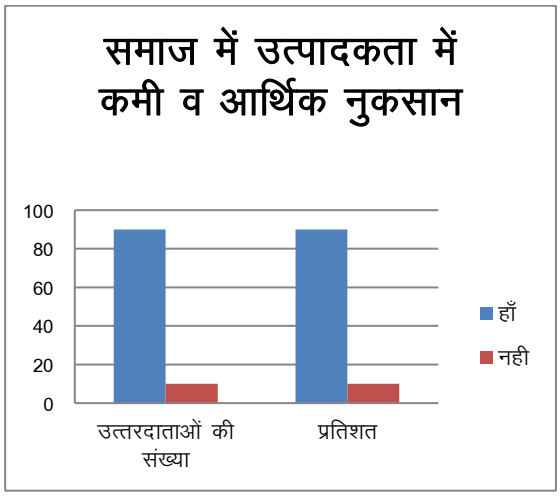

उपरोक्त तालिका क्र.04 का अध्ययन करने से पता चलता है कि स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ_के सेवन की युवाओं को जब लत पड़ जाती है तो जब तक घर में व्यवस्था होती है तो बैठकर

उपभोग व पैसो का दुरुपयोग करते है जब पैसे नही बचते तो गलत रास्ते में चल पड़ते है। अतः चौथी परिकल्पना स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ के सेवन से समाज में समाज में उत्पादकता में कमी व आर्थिक नुकसान होता है जिससे चौथी परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

निष्कर्ष :स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थों का दुरुपयोग समाज के लिए एक गंभीर अभिशाप है। यह युवाओं के स्वास्थ्य को नष्ट कर रहा है, जिससे अपराध दर बढ़ा रहा है और परिवारों को आर्थिक व भावनात्मक रूप से तबाह कर रहा है। शोधार्थी ने ऐसे युवक जो स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ का सेवन करते हैं उनकी सामाजिक, आर्थिक, मानसिक परिस्थितियॉ प्रभावित होती अंत वह समाज के लिये हसी व मजाक का पात्र बनकर रह जाता है। अन्तोगत्वा व्यक्ति का जीवन वहीं समाप्त हो जाता है जिससे समाज व राष्ट्र को अपूर्णनीय छति होती है।

संदर्भः

1. सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार। (2023). युवाओं में नशीली दवाओं के दुरुपयोगः समस्याएं और समाधान पर संसद की स्थाई समिति की रिपोर्ट। नई दिल्ली।
2. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (2025). अपराध इन इंडिया – वार्षिक रिपोर्ट। गृह मंत्रालय, भारत सरकार।
3. संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय (2024). वर्ल्ड ड्रग रिपोर्ट : यूथ एंड सब्सटेंस एब्यूज। भारतीय शोध पत्र एवं अकादमिक अध्ययन
4. कुमार, तेज (2020). ''नशा एक अभिशाप है यह एक ऐसी बुराई है'' जिससे इंसान का..... ''सोशल रिसर्च फाउंडेशन, 6(367)।
5. शर्मा, नरेन्द्र (2023). 'नशे की बढ़ती लत से युवाओं का भविष्य खतरे में'' सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हिमाचल प्रदेश।
6. सिंह, राजेश। (2024). ''युवा वर्ग में बढ़ते नशे की प्रवृत्ति का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन'' ग्लोबल इंटरनेशनल सोशल रिचर्स रिव्यू, 15(7)।